प्रेमचंद एवं उनकी रचनाओं का परिचय एवं महत्व

Karuna Pati Maithani[1], Dr. Govind Dwivedi[2]

Department of Hindi

[1,2]OPJS University, Churu (Rajasthan) - India

सार

प्रेमचंद के पिता का नाम मुंषी अजायबराय था। वे डाकखाने में मुंषी का काम करते थे। प्रेमचंद की माता का नाम आनंदी देवी था। उनकी तीन बहनें थीं। उनमें से तो दो बहुत पहले ही मर गई थी। तीसरी लड़की सुगीए जो जिन्दा थी प्रेमचंद उनसे सात आठ बरस छोटे थे। तीन लड़कियों के बाद पैदा होने के कारण वे 'तेतर कहलाते थे और एसी संतानों के बारे में लोगें का विश्वास है कि तेतर बच्चा माँ या बाप में से किसी एक को जरूर खो देता है। जीवन के प्रति उनकी अगाढ़ आस्था थी लेकिन जीवन की विषमताओं के कारण वह कभी भी ईश्वर के बारे में आस्थावादी नहीं बन सके। प्रेमचंद बहुमुख प्रतिभा के धनी थे। उनका व्यक्तित्व अंतुर्मुखी न होकर बहिमुखी था। एक साहित्यकार की रचनाओं पर शेधकार्य करने से पहले उसके साहित्यकार रूप तथा उसकी कृतियों का परिचय प्राप्त करना आवश्यक है। इसी सन्दर्भ में प्रेमचंद के व्यक्तित्व कृतित्व का परिचय प्राप्त करना अनिवार्य है। अग्रालिखित पहलुओं के माध्यम से प्रेमचंद के व्यक्तित्व व साहित्यिक रूप का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के युगंतकारी लेखक मुंशी प्रेमचंद का जन्म बनारस से आजमगढ़ की ओर जाने वाली सड़क पर हर से करीब चार माल की दूरी पर स्थित 'लमही नामक गाँव में संवत् 1937 अर्थात् जुलाई सन् 1880 शनिवास को श्रीवास्तव कायस्थ परिवार में हुआ था। प्रेमचंद का जन्मपत्री का नाम 'धनपतराय एव चाचा ताऊ का मुँहबोला नाम 'नवाबरायष था और इसी नाम से प्रेमचंद ने अपने लेखकीय जीवन का श्री गणे किया तथा मित्र द्वारा दिया हुआ नाम 'बम्बूकष था। प्रेमचंद के बारे में अमृतलाल नागर लिखते है ''मेरा ख्याल है कि घर में इनका प्यार का नाम भी नवाब ही रहा होगा। प्रेमचंद ने अपने पिता के एक संवाद का जिक्र किया हैए जिसमें वे नवाब कहकर पुकारे जाते हैं।

मुंशी प्रेमचंदने दो शादीयाँ की थीं। उनका प्रथम विवाह उनके नाना यानी मुंशी अजायबराय के नये ससुर ने अपने किसी मित्र के यहाँ बस्ती जिले की मेंहदाबल तहसील में रामपुर नामक गांव में वहाँ के जमींदार के यहाँ तय किया था। प्रेमचंद अपनी शादी से बहुत खुश थे। मंडप छाने के लिए बाँस भी उन्होंने खुद काटा था लेकिन शादी के बाद जब उन्होंने अपनी पत्नी की सूरत को पहली बार देखा तो जेसे उनका खून ही सूख गया। उनकी पत्नी का वर्णन करते हुए अमृतलाल लिखते हैं नाना साहब ने पन्द्रह साल के इस खूबसूरत नवाब के लिए ऐसी उम्र में ज्यादा काली भद्दी थुलथुल चेचकर अफीम खाने वाली भचककर चलने वाली औरत ही क्यों चुनी यह रहस्य उनके साथ ही चला गया। लेकिन इसमें शक नहीं कि जिस जिस ने देखा उसके मुँह से सर्द आह निकल गई। कहाँ नवाब कहाँ यह औरत का कार्टून। यहाँ तक कि मुंशी अजायबलाल से भी नहीं रहा गया और उन्होंने हिम्मत बटोरकर अपनी पत्नी से कह दिया लालाजी ने मेरे

लड़के को कुएँ में धकेल दिया। मेरा लड़का गुलाब सा लड़का और उसकी यह बीवी। मैं तो उसकी दूसरी शादी करूँगा।

पाँचवें साल से ही प्रेमचंद की शिक्षा का आरंभ हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू फारसी में हुई। लमही से मील सवा मील की दूरी पर एक गांव है लालपुर। वहीं एक मोलवी साहब रहते थे जो पेशे से तो दर्जी थे किन्तु मदरसा लगते थे। प्रेमचंद की प्रारंभिक शिक्षा वहीं पर हुई।

सन् 1895 में हाई स्कूल में भर्ती होने के लिए वे बनारस आए तब उन्होंने पिता से खुद ही कहा था कि खर्चा के लिए पाँच रूपये दे दिये जाया करें। पर बनारस आकर पता चला कि खर्च ज्यादा है। दो रूपये फीस के एक रूपये का दूध बाकी बचे दो रूपय उसमें कैसे गुजर हो सकेगा तब सोचा कि प्राईवेट में पढ़ जाए। दिनभर बनारस में रहकर पढ़ाई होती रात को घर पर कुप्पी के सामने बैठकर टाट बिछाकर पढ़ते।

प्रेमचंद का कृतित्व– कहानिया उपन्यास

प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन का शुभारंभ सन् 1901 से होता है और साहित्य की सेवा का यह कार्य जीवन के अंतिम दिनों तक चलता रहा, अर्थात् सन् 1936 तक। बीमारी की अवस्था में भी वे बराबर लिखते रहते। इस दृष्टि से देखा जाये तो वे सचमुच ही 'कलम के मजदूर थे। एक जगह वे स्वयं कहते हैं– मैं मजदूर हूँ और मजदूर को काम के बिना खाने का अधिकार नहीं है।''

मुंषी प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी कहानी के पितामह माने जाते हैं। उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से हो चुका था, लेकिन उनकी पहली हिन्दी कहानी सरस्वती पत्रिका के दिसंबर अंक में 1915 में सौत नाम से प्रकाशित हुई और 1936 में अंतिम कहानी कफन नाम से। इससे पहले हिंदी में काल्पनिक, एय्यारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएं ही की जाती थी। प्रेमचंद ने हिंदी में यथार्थवाद की शुरूआत की। भारतीय साहित्य का बहुत सा विमर्श जो बाद में प्रमुखता से उभरा चाहे वह दलित साहित्य हो या नारी साहित्य, उसकी जड़ें कहीं गहरे प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देती है। अपूर्ण उपन्यास असरारे मआबिद के बाद देशभक्ति से परिपूर्ण कथाओं का संग्रह सोजे–वतन उनकी दूसरी कृति थी, जो 1908 में प्रकाषित हुई। इस पर अंग्रेजी सरकार की रोक और चेतावनी के कारण उन्हें नाम बदलकर लिखना पड़ा।

प्रेमचंद ने अपनी कला के षिखर पर पहुँचने के लिए अनेक प्रयोग किए। जिस युग में प्रेमचंद ने कलम उठाई थी, उस समय उनके पीछे ऐसी कोई ठोस विरासत नहीं थी और न ही विचार और प्रगतिशील का कोई मॉडल ही उनके सामने था सिवाय बांग्ला साहित्य के। उस समय बंकिम बाबू थे, शरतचंद्र थे और इसके अलावा टॉलस्टॉय जैसे रूसी साहित्यकार थे। लेकिन उन्होंने गोदान जैसे कालजयी उपन्यास की रचना की जो कि एक आधुनिक क्लासिक माना जाता है। उन्होंने चीजों को खुद एक तरह से प्रेमचंद की परंपरा के तारतम्य में आती है। प्रेमचंद एक क्रांतिकारी रचनाकार थे, उन्होंने न केवल देशभक्ति बल्कि समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों को देखा और उनको कहानी के माध्यम से पहली बार लोगों के समक्ष रखा। उन्होंने उस समय के समाज की जा भी समस्याएँ थी उन सभी को चित्रित करने की शुरूआत कर दी थी। उसमें दलित भी आते हैं, नारी भी आती हैं। ये सभी विषय आगे चलकर हिन्दी साहित्य के बड़े विमर्श बने।

कहानी एवं उपन्यास

प्रेमचन्द ने लिखा है – "मेरी कहानियाँ प्रायःकिसी न किसी प्रेरणा या अनुभवि पर आदधारित होती है। इसमे मै डरामई रंग पैदा करने की कोशिश करता हूँ। परन्तु के विल घटना का विणरन केलिए मै कहानियाँ कभी नहीलिखतामैकहानीकिसी दाशरिनक या भाषात्मक तथ्य को दिखाना चाहता हूँ। जब तक इस प्रकार का कोई आदधार नहीं मिलता, मेरी कलम ही नहीं उठिाते। जमीन तैयार होने पर मै चरत्रिों का निमारण करता हूँ। ...जब तक मै किसी कहानी को आदरम्भ से अन्त तक मितिस्तष्क मे न जमा लूँ, मै लिखने नहीं बैठता। चरत्रिों का निमारण इसी दृष्टि से करता हूँ कि वे कहानी के अनुकूल हो।

प्रेमचदंजी ने कथा, उपन्यास, नाटक, निबंध इन विविध साहित्य प्रकारों से उनकी लेखनी स'ाक्त रूप धार.ा करने लगी। प्रेमचंद जी के लेखनकृतियों को इस तरह से वर्गीकृत किया जा सकता है–

प्रेमचन्द कहानीकार के रूप मे हिन्दी कहानी साहित्य मे प्रेमचन्द एक मील का पत्थर है। अनेकों ने अब तक उन पर बहुत कुछलिखा है लेकिन उपन्यासकार प्रेमचन्द की अपेक्षा कहानीकार प्रेमचन्द पर बहुत कम लिखा है। उनका कहानी संसार बहुत अधिकविस्तृणत एवं व्यापक है। प्रेमचन्द की कहानियों के संबंध मे कहे तोहिन्दी तथा उदर का प्रश्न बहुत ही जटिल एवं उलझा हुआ है।

प्रेमचंद जी कथाकार के रूप में भी प्रसिद्ध थे

प्रारंभ में उन्होंने उर्दू में ही कथा साहित्य लिखा। उसके बाद सप्तसरोज इस कथा संग्रह से प्रेमचंद हिन्दी कथाकार के रूप में सामने आये। उनका कथा क्षेत्र व्यापक था। उनकी सभी कथाऐं मानसरोवर में प्रकाशित हुई। मानसरोवर के आठ भाग हैं। उनें साधारणतः साढे तीन सौ कथाऐं समाविष्ट हैं। प्रेमचंद की बडे घर की बेटी, पंचपरमेश्वर, नमक का दारोगा, गुल्ली–डंडा, कुसुम, सुहाग की साडी, दिल की रानी, दूध का दाम, शतरंज की खिलाडी, पूस की रात, कफन आदि कथाऐं उल्लेखनीय हैं। प्रेमचंद जी का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कथाओं में स्पष्ट परिलक्षित होता है।

- **उपन्यास :**

प्रेमचंद उपन्यास सम्राट के नाम से जाने जाते थे। उनके प्रेमा असरारे, मआबिद उर्फ देवस्थान का पुजारी, किशना, रूठी रानी, जलवर ईसार, यह उर्दू भाषा के उपन्यास इनमें से कुछ हिन्दी भाषांतरित किये थे। इसके बाद हिन्दी में उन्होंने प्रतिज्ञा, वरदान, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान यह प्रतिभात्कृष्ट आविष्कार करने वाले उपन्यास प्रसिद्ध हुये। उनका मंगलसूत्र यह उपन्यास अपर्णावस्था में ही रह गया।

- **नाटय साहित्य :**

प्रेमचंदजी ने संग्राम, कर्बला, प्रेम के वेदी, आदि नाटक लिखे। ग्रामीण जीवन का चित्रण करने वाला संग्राम यह प्रेमचंद का प्रतिनिधिक नाटक है। प्रेम की वेदी यह उनकी एकांकि का है। विवाह समस्या का विश्लेषण

इसमें किया है। कर्बला यह नाटक 1924 में प्रेमचंद जी ने लिखा। यह एक ऐतिहासिक धार्मिक नाटक है। इसका अंत दुःखदायी दर्शाया गया है।

- **निबंध लेखन**

प्रेमचंद जी का विचारोत्तेजक साहित्य निबंध कुछ विचार इस नाम से प्रकाषित हुये। उनका साहित्य का उद्वष्य निबंध संग्रह लक्षणीय रहा।

- **पत्रपत्रिका**

प्रेमचंद जी ने मर्यादा, माधुरी आदि नियतकालिकाओं का संपादकपद स्वीकारा था। प्रेमचंद जी ने शुरू किया हुआ। हंस और जागरण यह हिन्दी साहित्य पत्रिका है। हमशा ही प्रेमचंदजी द्वारा पत्रपत्रिकाओं में लेख किया था। प्रेमचंद जी द्वारा लिखे हुये कई संपादकीय विविध प्रसंग यह तीन भागों में समाविश्ट करके प्रकाषित हुये हैं।

- **आलोच्य उपन्यासों का सक्षिप्त रचनात्मक परिचय :**

गद्य साहित्य में प्रेमचंद जी का स्थान प्रमुख था। उनका विषय क्षेत्र तथा विषय का प्रतिपादन अप्रतिम था। प्रस्तुत शोध प्रबंध का विषय मुंशी प्रेमचंद और हरिनारायण आपटे के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक चिंतन यह है। इसलिये प्रेमचंद के कृतित्व में उनके उपन्यासों का परामर्श यहां पर किया जा रहा है।

कर्मभूमि में में राजनैतिक चेतना

प्रेमचन्दजी का कर्मभूमि' उपन्यास राजनैतिक परिस्थितियों से भली प्रकार प्रभावित हैं। प्रेमचन्दजी का कहना है कि राजनैतिक आन्दोलन की सफलता के लिए सामाजिक सुधार अनिवार्य है। स्वराज्य–प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम जनता में शक्ति उत्पन्न करनी होगी । सेवाश्रम की स्थापना के मूल में यही उद्देश्य है। प्रेमचन्दजी ने बताया है कि राजनीतिक चेतना सम्पन प्रेमचन्द युग की प्रमुख समस्या स्वाधीनता प्राप्ति की थी। पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति के लिए कटिवद्ध गाँधीजी ने सत्याग्रह द्वारा स्वराज्य आन्दोलन का सूत्रपात कर भारतीय राजनीति को एक नया आयाम प्रदान किया। "मेरी आकांक्षाएँ कुछ नहीं है। इस समय तो सबसे बड़ी आकांक्षा यही है कि हम स्वराज्य–संग्राम में बिजयी हों ! धन वा यश की लालसा मुझे नहीं रहीं। खाने भर को मिल ही जाता है। मोटर और गले की मुझे हवस नहीं। हाँ, यह जरुर चाहता हूँ कि दो–चार ऊँची कोटि की पुस्तकें लिखें, पर उनका उद्देश्य भी स्वराज्य–विजय ही है।'' ''(प्रेमचन्दजी)''

प्रेमचन्दजी ने 'कर्मभूमि' में स्वराज्य–प्राप्ति के लिए एक व्यापक आन्दोलन का समर्थन किया है। नगर और ग्राम दोनों ही स्थानों पर जागृति की आवश्यकता है। सुखदा और डॉ.शान्तिकुमार आदि नगर में कार्य करते हैं और अमरकान्त ग्रामों में चेतना फैलाता है। इस प्रकार 'कर्मभूमि' को सामाजिक उपन्यास के साथ राजनैतिक अथवा राष्ट्रीय उपन्यास कहा जाता है, क्योंकि इसमें समाज की समस्याओं के स्थान पर सम्पूर्ण राष्ट्र की समस्याओं को प्रधानता मिली है। महात्मा गाँधी ने राष्ट्र के रंगमंच पर अवतरित होकर बहुत–से

सामाजिक सुधारों को भी, "राष्ट्रीय आन्दोलन के अट्ठारह (१८)–सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम बनाया (१) साम्प्रदायिक एकता (२) अस्पृश्यता–निवारण (३) मद्यपान–निषेध (४) खादी–प्रचार (५) स्त्रियों की दशा–सुधार (६) ग्रामोद्योग (७) गाँव की सफाई (८) बुनियादी शिक्षा (९) स्वास्थ्य और सफाई की शिक्षा (१०) मातृ–भापा शेम (११) राष्ट्रभाषा प्रेम (१२) आर्थिक समानता (१३) किसानों का संगठन (१४) मजदूरों का संगठन (१५) विद्यार्थियों का संगठन (१६) विदेशी वस्त्र यहिप्कार (१७) ग्रौढ़–शिक्षा (१८) दलित जातियों का उद्धार (५३) आदि में सम्मिलित कर लिया था। वे जानते थे कि समाज–सुधार से ही राष्ट्रीय आन्दोलन को विविध वर्ग से राजा का जल प्राप्त हो सकता है । इस रचनात्मक कार्यक्रम से अनेक अगों का कर्मभूमि' में बड़े कलात्मक ढंग से समावेश हुआ है। इसलिए इसे राष्ट्रीय उपन्यास होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

'कर्मभूमि' इसलिए भी राष्ट्रीय उपन्यास है, क्योंकि यह महात्मा गाँधी के सन् १९३०–३१ के सबिनव–अबशा–आन्दोलन की झाँकी देता है। २६ जनवरी १९३० को कांग्रेस ने 'पूर्ण स्वाधीनता प्राप्ति का प्रस्ताव पास किया। १२ मार्च १९३० को महात्माजी ने दांडी–मार्च शुरु करते हुए नमक सत्याग्रह' का आरम्भ इन शन्दों से किया– "मैं लोगा तो आजादी लेकर, बरना मेरी लाश समुद्र में तैरती नजर आयेगी।'' आजादी की जंग का यह शंखनाद था। ५ मई १९३० को गाँधीजी को गिरपतार करने पर जनता का रोप भभक उठा। विरोध–प्रदर्शन के लिए जगह–जगह जुलूस निकले। हड़ताल हुई। कई जगहों पर जनता का हो गयी। देश के प्रथम पंक्ति के नेता एक–के–बाद–एक गिरफ्तार हुए। इस आन्दोलन में हिन्दू–मुसलमान, किसानमजदूर, गरीण –अमीर, युवा–वृद्ध, विद्यार्थी–ग्रोफेसर, शिक्षित–अशिक्षित, गहने–माताएँ, व्यापारी – अछूत सभी ने सक्रिय रुप से भाग लिया। फलस्वरुप नमक–कानून दिन दहाड़े तोड़ा गया, स्थानस्थान पर विलायती वस्त्रों की होली जलने लगी, शराश और विदेशी कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिंग होने लगी।

- **मद्यपान निषेध :**

प्रेमचन्दजी ने कर्मभूमि' उपन्यास में नगरीय–समाज और ग्रामीण–समाज में शराण की आदत दिखाई है। प्रेमचन्दजी के यहाँ नगर से ज्यादा ग्रामीण लोगों में शरण की आदत ज्यादा है। प्रेमचन्दजी नगर में व्याप्त यह समस्या मिटाना चाहते हैं। जिस प्रकार महात्मा गाँधीजी मद्यनिषेध भारत चाहते थे। मद्यपान से समाज की बखादी होती है। व्यक्ति कुमार्ग पर चलता है। इसलिए प्रेमचन्दजी ने कर्मभूमि' उपन्यास में काले खाँ को शराणी के रुप में दिखाया है। जो शराण पीकर दुकान पर आते हैं, जो अमरकांत को पसंद नहीं था– "अमर को शराण की ऐसी दुर्गन्ध आयी कि उसने नाक बन्द कर ली और मुँह फेरकर योला–"क्या तुम शराज पीते हो।'

इस प्रकार समाज में हो रहे न्याय–अन्याय सभी को दूर करना है तो पहले समाज को व्यसन से मुक्त कराना पड़ेगा। मद्यपान–निषेध से नगरीय समाज को एक समृद्ध समाज बनाया जा सकता है । दूसरी और गाँव में अमरकान्त सभी को समझाते हैं और एक–एक को शराण की आदत खत्म करने का कार्यक्रम करता है या लोगों में जागृति फैलाते हैं।

- **प्रदूषण :**

'कर्मभूमि' उपन्यास में प्रेमचन्दजी ने गंदगी का भी वर्णन किया है। जो आज नगर की मुख्य समस्या है। प्रेमचन्दजी ने तत्कालीन समय में भी बही प्रश्न उठाया था। जिस कार गाँधीजी ने ग्रामों की सफाई पर भार

दिया था। उसी प्रकार प्रेमचन्दजी अपने उपन्यास 'कर्मभूमि' में सफाई की बात करते हैं। जण शुढ़िया पठानिन अमरकान्त की दुकान पर आती है और अमरकान्त उसको छोड़ने के लिए जाता है तण यहाँ के मोहल्ले में गंदगी का वर्णन प्रेमचन्दजी करते हैं– "गली में गड़ी दुर्गन्ध थी। गन्दे पानी के नाले दोनों तरफ यह रहे थे। घर प्रायः सभी कच्चे थे। गरीणों का मुहल्ला था। शहरों के बाजारों और गलियों में कितना अन्तर है ! एक फूल है– सुन्दर, स्वच्छ, सुगन्धमयय दूसरी जड़ है– कीचड़ और दुर्गन्ध से भरी टेढ़ी–मेढ़ीय लेकिन क्या फूल को मालूम है कि उसकी हस्ती जड़ से है ।''

उपसंहार

वर्तमान समय में सभ्यता के विकास के साथ ही समाज को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। मशीनी युग के इस निराशाजनक वातावरण में मानव के उदार मूल्य नष्ट होने के साथ छीना–झपटी होने, स्वार्थी प्रवृत्तियां बढ़ने और हिंसा जैसी कई प्रकार की समस्याएं सामने आई हैं। आदिम युग में जब मनुष्य में समाज भावना का जन्म न हुआ था, तब उसके विचार एकांगी थे, उसकी कठिनाईयां भी व्यक्तिगत होती थी, मगर आज के दौर में व्यक्ति के साथ समस्याएं पूरे देश एवं समाज के अस्तित्व का सवाल बन जाती हैं, इसलिए उसके प्रतिरोध के लिए भी सामूहिक प्रयत्नों की जरूरत होती है। सांस्कृतिक चेतना का भी यही नैतिक आधार माना जाता है, जिसमें एक आदमी की समस्या पूरे देश की समस्या बन जाती है। राष्ट्रीय समाज के एक अभिन्न अंग के रूप में साहित्यकार का दृष्टिकोण सामूहिक चेतना का प्रतिबिंब होता है। वह राष्ट्र के आसन्न संकटों का समाधान खोजता है और लोगों को प्रेरित करता है कि वे उदार लक्ष्य से भटके नहीं, हिम्मत न हारें। साहित्यकार अपने विचार एवं अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति से सामाजिक बुराईयों के हल खोजता है।

राष्ट्रीय जीवन और साहित्य के सन्दर्भो में प्रेमचन्द की प्रासंगिकता पर विचार करना कई मायनों में जरूरी है, जिससे एक तो भारतीय जन–जीवन में आ रहे बदलावों के बीच बेहतर समाज की रचना के लिए प्रेमचन्द के बताए रास्तों की पड़ताल होती है और दूसरे आधुनिक साहित्य में बढ़ते व्यक्तिवाद और आमजन की उपेक्षा के इस कालखंड में प्रेमचन्द और उनके साहित्य की सार्थकता का मूल्यांकन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नया हिन्दी साहित्य : एक भूमिका – प्रो0 प्रकाशचंद गुप्त, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1946, पृ0 27
2. नये पुराने झरोखे – हरबंश राय बच्चन, राजपाल एंड संस, दिल्ली, प्र0सं0 1962, पृ0 32
3. निबंध और निबंध – इंद्रनाथ मदान, बंसल एण्ड कंपनी, दिल्ली, 1966, पृ0 19
4. प्रेमचन्द – रामरतन भटनागर, किताब महल, इलाहाबाद, 1948, पृ0 14
5. प्रेमचन्द – डा0 त्रिलोकी नारायण दीक्षित, साहित्य निकेतन, कानपुर, 1952, पृ0 33